5/10/20 पृष्ठ संख्या (1) (II)

11 बी ए द्वितीय वर्ष February

Thursday WK 07 (042-324) 2016

भक्तिकाल की विशेषताएं

प्र०) भक्तिकाल की मुख्य प्रवृत्तियाँ या विशेषताएं

(1) स्वान्तः सुखाय की भावना।

(2) वाह्य आडम्बरों का विरोध

(3) नामस्मरण की महत्ता

(4) गुरु की मान्यता

(5) भक्ति भावना का प्राधान्य

(6) अहंकार का त्याग

(7) सत्संगति का महत्व

(8) शास्त्र ज्ञान की अपेक्षा निजी अनुभव पर विशेष बल

(9) सत्य, त्याग, अहिंसा जैसे आदर्शों का पालन

(10) माया का खंडन

(11) समन्वय की भावना

February

2016 संत काव्य की प्रमुख विशेषताएं लिखिए?

या

निर्गुण सम्प्रदाय की ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएं

12 WK 07 (043-323) Friday

(1) निर्गुण निराकार ब्रह्म के उपासक →

संत कवि निर्गुण निराकार ईश्वर की उपासना करते हैं। ये निर्गुण निराकार एक ईश्वर के उपासक हैं।

(2) मिथ्या आडम्बरों का विरोध →

संत बाहरी दिखावा आडम्बर का कड़ा विरोध करते हैं। जैसे जप-तप, माला मूर्ति पूजा आदि का खंडन करते हैं।

माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

(3) हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षपाती संत →

संत हमेशा से ही हिन्दू मुस्लिम के वैमनस्य को दूर करना चाहते थे। इसी लिए उन्होंने अपने साहित्य में दोनों की आलोचना की है।

हिन्दू कहे मोहि राम प्यारा, तुरक कहे रहिमाना।
आपस में लरि लरि मुए, मरम न काहू जाना।

FEBRUARY 2016							
WK	M	T	W	T	F	S	S
06	1	2	3	4	5	6	7
07	8	9	10	11	12	13	14
08	15	16	17	18	19	20	21
09	22	23	24	25	26	27	28
10	29						

(4) **प्रेम का महत्व** → संतो ने प्रेम को सबसे अधिक महत्व दिया है, बिना प्रेम के ज्ञान व्यर्थ है। इन्होने मुक्त कंठ से प्रेम के महत्व को स्वीकारा है। प्रेम के समक्ष ऊँच नीच को महत्व नही दिया।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े तो पंडित होय।

(5) **हिंसा का विरोध** – संतो ने हिंसा का घोर विरोध किया है। कबीर ने कहा है कि हिंसा से ईश्वर की वन्दना सफल नही होती

(1) दिन भर रोजा रहत है, रात हनत है गाय
(2) बकरी खाती पात है, ताकी खींची खाल
जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल

(6) **मूर्ति पूजा का विरोध** – संतो ने मूर्ति को पत्थर मानकर उसकी उपासना का विरोध किया है।

पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते ये चाकी भली, जो पीस खाय संसार॥

ो सबसे
(व..
व्यर्थ है।
स्वीकारा
ने दिया।
कोय।
होय।
सा का
है कि
नहीं होती
, गाय
ख्याल
हवाल
ने
ना का
र।
संसार ॥

(1) पाखंडो का विरोध (जाति पांति का विरोध)

संतो ने पाखंडो का विरोध किया है।
जैसे - अल्ला केवल मस्जिद में जाकर नही मिलता बल्कि सच्चे हृदय से याद करने पर मन में ही मिलता है।

जैसे - कांकर पाथर जोड़ के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय॥

(2) नाम स्मरण का महत्व —

संतो ने निराकार ईश्वर के नाम स्मरण का महत्व सर्वाधिक बताया है। नाम स्मरण के द्वारा ही संसार के माया मोह से मुक्त होकर ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है।

॥ राम नाम ही सार है, दूजा दुक्ख अपार ॥

(3) गुरु का सर्वाधिक महत्व →

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पाय
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय

संतो ने कहा है कि गुरु के बताए मार्ग पर चलने से ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है।

FEBRUARY 2016

WK	M	T	W	T	F	S	S
06	1	2	3	4	5	6	7
07	8	9	10	11	12	13	14
08	15	16	17	18	19	20	21
09	22	23	24	25	26	27	28
10	29						

15 05/10/2020 पृष्ठ संख्या (5)

Monday ◆ WK 08 (046-320) February 2016

(10) सत्संगति का महत्व

(11) माया का खंडन

(12) आत्मा परमात्मा की रहस्यात्मकता को दर्शाना

जल में कुंभ, कुंभ में जल है बाहर भीतर पानी, फूटा कुंभ जल जल ही समाना यह तथ्य कह्यो ग्यानी।

निष्कर्ष — इस प्रकार इन संत कवियों ने रूढ़िवादिता पाखण्ड, मूर्तिपूजा, जातपात ऊँच नीच, हिंसा आदि का घोर विरोध कर सामाजिक सुधार का कार्य किया।

5/10/20 पृष्ठ संख्या (1) (II)

बी.ए द्वितीय वर्ष

11 Thursday WK 07 (042-324) February 2016

भक्तिकाल की विशेषताएं

प्र०) भक्तिकाल की मुख्य प्रवृत्तियाँ या विशेषताऐं

(1) स्वान्तः सुखाय की भावना
(2) बाह्य आडम्बरों का विरोध
(3) नामस्मरण की महत्ता
(4) गुरु की मान्यता
(5) भक्ति भावना का प्राधान्य
(6) अहंकार का त्याग
(7) सत्संगति का महत्व
(8) शास्त्र ज्ञान की अपेक्षा निजी अनुभव पर विशेष बल
(9) सत्य, त्याग, अहिंसा जैसे आदर्शों का पालन
(10) माया का खंडन
(11) समन्वय की भावना

संत काव्य की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

या

निर्गुण सम्प्रदाय की ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएं

(1) निर्गुण निराकार ब्रह्म के उपासक →

संत कवि निर्गुण निराकार ईश्वर की उपासना करते हैं। ये निर्गुण निराकार एक ईश्वर के उपासक हैं।

(2) मिथ्या आडम्बरों का विरोध →

संत बाहरी दिखावा आडम्बर का कड़ा विरोध करते हैं। जैसे जप-तप, माला, मूर्ति पूजा आदि का खंडन करते हैं।

माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

(3) हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षपाती संत →

संत हमेशा से ही हिन्दू मुस्लिम के वैमनस्य को दूर करना चाहते थे। इसी लिए उन्होंने अपने साहित्य में दोनों की आलोचना की है।

हिन्दू कहे मोहि राम प्यारा, तुरक कहे रहिमाना।
आपस में लरि लरि मुए, मरम न काहू जाना।

FEBRUARY 2016

WK	M	T	W	T	F	S	S
06	1	2	3	4	5	6	7
07	8	9	10	11	12	13	14
08	15	16	17	18	19	20	21
09	22	23	24	25	26	27	28
10	29						

(4) प्रेम का महत्व → संतो ने प्रेम को सबसे अधिक महत्व दिया है, बिना प्रेम के ज्ञान व्यर्थ है। इन्होने मुक्त कंठ से प्रेम के महत्व को स्वीकारा है। प्रेम के समक्ष ऊँच नीच को महत्व नहीं दिया।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े तो पंडित होय।

(5) हिंसा का विरोध – संतो ने हिंसा का घोर विरोध किया है। कबीर ने कहा है कि हिंसा से ईश्वर की वन्दना सफल नहीं होती

(1) दिन भर रोजा रहत है, रात हनत है गाय
(2) बकरी खाती पात है, ताकी खींची खाल
जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल

(6) मूर्ति पूजा का विरोध – संतो ने मूर्ति को पत्थर मानकर उसकी उपासना का विरोध किया है।

पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूँजू पहार।
ताते ये चाकी भली, जो पीस खाय संसार॥

(1) पाखंडो का विरोध (जाति पांति का विरोध)

संतो ने पाखंडो का विरोध किया है।
जैसे - अल्ला केवल मस्जिद में जाकर
नही मिलता बल्कि सच्चे हृदय से याद
करने पर मन में ही मिलता है।

जैसे - कांकर पाथर जोड़ के, मस्जिद लई बनाय।
तो चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥

(2) नाम स्मरण का महत्व —

संतो ने निराकार ईश्वर के नाम स्मरण का
महत्व सर्वाधिक बताया है। नाम
स्मरण के द्वारा ही संसार के माया
मोह से मुक्त होकर ईश्वर की प्राप्ति
की जा सकती है।

॥ राम नाम ही सार है, दूजा दुक्ख अपार ॥

(3) गुरू का सर्वाधिक महत्व →

गुरू गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय

संतो ने कहा है कि गुरू के
बताए मार्ग पर चलने से ही
ईश्वर की प्राप्ति संभव है।

FEBRUARY 2016

WK	M	T	W	T	F	S	S
06	1	2	3	4	5	6	7
07	8	9	10	11	12	13	14
08	15	16	17	18	19	20	21
09	22	23	24	25	26	27	28
10	29						

15 05/10/2020 पृष्ठ संख्या (5)

Monday • WK 08 (046-320) February 2016

(10) सत्संगति का महत्व

(11) माया का खंडन

(12) आत्मा परमात्मा की रहस्यात्मकता
~~(13)~~ को दर्शाना

जल में कुंभ, कुंभ में जल है
बाहर भीतर पानी, फूटा कुंभ जल जलहि
समाना यह तथ्य कह्यो ग्यानी।

निष्कर्ष — इस प्रकार इन संत कवियों ने रूढ़िवादिता, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, जात पात, ऊँच नीच, हिंसा आदि का घोर विरोध कर सामाजिक सुधार का कार्य किया।